Easter Puja

Date	:	14th April 1996
Place	:	Calcutta
Type	:	Puja
Speech Language	:	Hindi

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 06
English	-
Marathi	-

II Translation

English	07 - 11
Hindi	-
Marathi	-

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahiri

आज हम लोग ईस्टर की पूजा कर रहे हैं। सहजयोगियों के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण दिन है क्योंकि ईसा मसीह ने दिखा दिया कि मानव का उत्थान हो सकता है और उस उत्थान के लिए हमें प्रयत्नशील रहना चाहिए। जो उनको क्रूस पर चढ़ाया गया उसमें भी एक बहुत बड़ा अर्थ है। क्रूस पर टांग कर उन की हत्या की गई और क्रूस आज्ञा चक्र पर एक स्वास्तिक का ही स्वरूप है। उसी पर टांग कर के और ईसा मसीह वहीं पे गत-प्राण हुए। उस वक्त उन्होंने जो बातें कहीं, उनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण बात थी कि उन्होंन कहा कि माँ का इन्तजार करो। माँ की ओर नजर करो। इस का अर्थ कोई कुछ भी लगाए पर दिखाई देता है कि उन्होंने ये बात कही कि मैं तुम्हारे लिए एक ऐसी शक्ति भेजूंगा जिसके तीन अंग होंगे, जो त्रिगुणात्मिका होगी। और उस का वर्णन बहुत सुन्दरता से किया है कि एक शक्ति होगी जो आप को आराम देगी। आराम देने वाली शक्ति जो हमारे अन्दर है, वह है महाकाली की शक्ति, जिससे हमें आराम मिलता है, जिससे हमारी बिमारियाँ ठीक होती हैं, जिससे हमारे अनेक प्रश्न, जो भूतकाल के हैं, ठीक हो जाते हैं। दूसरी शक्ति जो उन्होंने भेजी, वह थी, महासरस्वती की शक्ति। महासरस्वती की शक्ति को उन्होंने काऊंसलर (Counsellor) कहा। यह आप को समझाएगी, आपको उपदेश देगी, योग निरुपण करेगी। इस दूसरी शक्ति से हम ज्ञान-सूक्ष्म ज्ञान-को प्राप्त करेंगे। और तीसरी शक्ति महालक्ष्मी की। जिससे कि हम अपने उत्थान को प्राप्त होंगे। इस प्रकार तीन शक्तियों की उन्होंने बात की थी।

बुद्ध ने भी कहा था कि मैं तुम्हें ''मात्रेया'' दूंगा यानि तीन तरह की माता या माताएँ। लोगों को समझ ही नहीं आया कि ''मात्रेया'' क्या होता है, इसलिए उन्होंने ''मैत्रया'' कर दिया। यह जो ''मात्रेया'' थी, यह एक साथ आदिशक्ति में ही हो सकती थी और आदिशक्ति को उन्होंने कहा तो ज़रूर होगा "Premordial Mother" पर जिन्होंने बाईबल को ठीक किया, उन्होंने उसे ''होली घोस्ट'' (Holy Ghost) बना दिया और उसकी जगह कबूतर बना दिया। क्योंकि जिन्होंने बाईबल को ठीक किया उन्हें स्त्री जाति से बहुत नफरत थी और वे विश्वास ही नहीं कर सकते थे कि एक स्त्री भी ऐसा ऊँचा कार्य कर सकती है! उस नफरत के कारण उन्होंने उस का रूप अजीब सा बना दिया-Holy Ghost यानि कि एक कबूतर। कबूतर का अर्थ है कि वह एक 'शान्ति का दूत' होता है। स्त्री की बात ही नहीं की। अपने शास्त्रों मे कहा गया है ''सहस्रारे महामाया''। तो वो महामाया स्वरूप होंगी। लोग उन्हें पहचान नहीं पाएँगे। पहचानने के लिए भी आपको आत्म साक्षात्कार लेना पड़ेगा। यदि आप ने आत्म-साक्षात्कार नहीं लिया तो आप पहचान ही नहीं सकते। अपने जीवन ही में उन्होंने जितना खुलकर कह सकते थे, कहा। पर न जाने इन्होंने कितनी बातें बताईं और कितनी नहीं बताई और छिपाई।

सहयोग के लिए ईसा मसीह का आना बहुत ज़रूरी था। वो स्वयं एक चिर बालक है। यह तो अब सिद्ध हो गया है कि वे गणेश का अवतरण हैं। गणेश का अवतरण संसार में एक ही बार हुआ और वह है ईसा मसीह के रूप में। इन तीनों का कार्य-जिसे हम कह सकते हैं बुद्ध, महावीर और ईसा मसीह-जिस स्तर पर हुआ वह स्तर तपस्या का है। इसलिए **विराट पर** इन्होंने कार्य किया। तीनों के कार्य में तपस्या का महत्त्व है, कि मनुष्य को तपस्या करनी चाहिए। तपस्या करके ही वह आज्ञा चक्र को भेद सकता और बाहर जा सकता है। आज्ञा चक्र का भेदन होना अति आवश्यक था क्योंकि उस के विना आपकी कुण्डलिनी ऊपर उठ ही नहीं सकती थी। आज्ञा चक्र का भेदन ईसा मसीह के पुनर्जन्म (Resurrection) से हुआ। उनकी मृत्यु हुई और फिर उनका पुनर्जन्म हुआ। अत: हम लोगों के लिए एक बड़ा भारी संदेश है ईस्टर में, कि ईसा मसीह के उत्थान से ही हम लोगों ने इस उत्थान को प्राप्त किया। सबसे कठिन चक्र है इन्सान में मनुष्य में-आज्ञा चक्र क्योंकि मनुष्य हर समय सोचता ही रहता है और सोच-सोच कर उसके सिर की एक मन के बुलबुले की सी स्थिति बन जाती है। वह विचारों से परे नहीं जा सकता। जब आज्ञा का भेदन होता

है तभी आप विचारों से दूर जा पाते हैं। इसलिए यह कहना चाहिए कि यदि ईसा मसीह ने अपने प्राण देकर के आज्ञा से उत्थान नहीं किया होता तो सहजयोग मुश्किल हो जाता। कार्य तो सभी अवतरणों ने किया अपनी-अपनी जगह, अपने-अपने समय, अपने-अपने स्थान पर। परन्तु जो कार्य ईसा मसीह के उत्थान से हुआ वह बहुत ही कमाल की चीज़ थी। इसलिए आज्ञा का भेदन बहुत मुश्किल कार्य था। आज्ञा से ऊपर उठाना कोई मुश्किल कार्य नहीं। जितने भी गुरु हो गए बड़े-बड़े, उन्होंने बहुत कार्य किए। उन्होंने बहुत सी ऐसी बातें करीं कि जिसके कारण लोगों में जागृति हुई, धर्म के प्रति रुचि हुई व आत्मसाक्षात्कार की ओर ध्यान आकर्षित हुआ। ईसा इस देश में आए क्योंकि वहाँ के लोगों, जहाँ से वो आए थे, की दृष्टि में सूक्ष्मता नहीं थी। आध्यात्म नहीं था। इसलिए वे हिन्दुस्तान में आए और काश्मीर में वे शालीवाहन राजा से मिले। शालीवाहन ने उनसे पूछा, "तुम्हारा क्या नाम है?" उन्होंने कहा, "मेरा नाम ईसा मसीह है।" मसीह यानि जो सन्देश लेकर आता है। और मैं उस देश से आ रहा हूँ जहाँ सभी मलेच्छ रहते हैं। मलेच्छ यानि जिन्हें मल की इच्छा होती है। आप देखते है कि जितने भी ये विदेशी होते हैं उन्हें मल की ही इच्छा रहती है, सिर्फ पागलपन ही अच्छा लगता है। आप उनकी फिल्में देखिए तो सोचेंगे, क्या ये लोग पागल हैं? हमारे देश में इन लोगों को पहले मलेच्छ कहते थे यानि मल की इच्छा करने वाले मलेच्छ। ईसा ने कहा उन को तो मल की इच्छा है और मैं वहाँ कहाँ जाऊँ, मुझे तो आध्यात्म को जानना है। तो शालीवाहन ने कहा, आप तो पहुंचे हुए हैं। आप अपने ही देश में लोगों को 'निर्मल तत्वम्' यानि Principle of Purity लोगों को सिखाएँ। बहुत ज़रूरी है, यदि आपने लोगों को निर्मल तत्वम् सिखा दिया तो लोग मलेच्छपन से छुटकारा पा जाएँगे। ईसा वापिस गए और किसी तरह 3½ वर्ष तक रहे और फिर उन्हें क्रूसारोपित कर दिया गया। जिस शान से उन्होंने प्राण त्यागे, उससे जाहिर होता है कि उनका अद्भुत व्यक्तित्व था और मात्र 3½ साल के थोड़े से समय में उन्होंने अपने जीवन में जो कार्य किए हैं वह बहुत महान थे। हालांकि उन्होंने किसी को आत्मसाक्षात्कार नहीं दिया, क्योंकि उस समय सत्य को खोजने वाले लोग नहीं थे जैसे आज हैं, मेरे नसीब अच्छे हैं। इसलिए जो कार्य हुआ वह आत्मसाक्षात्कार से पहले का कार्य था। यानि लोगों ने जाना कि इस मनुष्य जीवन से परे भी कोई और जीवन है। उन्होंने कहा कि तुम्हे फिर से जन्म लेना होगा। उनका उत्थान फिर से जन्म लेना ही है। और अपने यहाँ भी कहते हैं कि जिस प्रकार अंडे से पक्षी जन्म लेता है, उसी प्रकार जब दूसरा जन्म होता है तो उसे द्विज कहना चाहिए, जिसका अर्थ दूसरी बार है। और जब उसका परिवर्तन हो जाता है पूरी तरह से तो उसमें पूर्णतया शक्ति आ जाती है। उस के पास सारी संचार शक्ति आ जाती है। आपको तो मालूम है कि साईबेरिया से उड़कर के कैसे पक्षी हिन्दुस्तान में आ जाते हैं। जाड़े में यहाँ आते हैं और गर्मियों में वहाँ चले जाते हैं। न उनके पास कोई राडार है न एयरोप्लेन है। वे हर साल उसी तालाब पर आते हैं जहाँ पहले आते थे। एक बार एक प्रयोग किया। पक्षियों के कुछ बच्चों को छिपा दिया, तो उन्होंने खोज निकाला अपने बच्चों को। कुछ बच्चों को जिन्हें खोज नहीं निकाला था खुद ही उड़ कर चले आए। उनका कोई अगुआ नहीं था, उन्हें कोई बताने वाला नहीं था फिर भी वे उड़कर ठीक से आ गए। इसे कहते हैं कि परमात्मा ने संसार में सारी व्यवस्था सुन्दरता से की है ताकि हम अपने उत्थान को प्राप्त करें। मैं तो इसे (Blossom time) बसन्त ऋतु कहती हूँ। आप इतने लोग आज यहाँ बैठे हैं, ऐसे ईसा मसीह के सामने कहाँ थे? और इस से हजारों गुणा संसार मे फैले हैं। देख करके बड़ा आश्चर्य होता है कि ईसा मसीह के सामने ये सब लोग नहीं थे, और न ही कोई जानता था कि आत्म साक्षात्कार क्या है?

आत्म साक्षात्कार प्राप्त करना क्यों आवश्यक है? आज भी हमारे देश मे भी हैं ऐसे अन्धे लोग जो इस बात को नहीं समझते। पर हमारे यहाँ जो महान गुरु हो गए हैं उन के कारण एक बहुत बड़ी समस्या दूर हो गई है कि लोगों में इसके बारे में ज्ञान हो गया है। सब जानते हैं कि हमें दूसरा जन्म लेना है, अपने को पहचानना है। जो कुछ भी शस्त्र लिखे गए हैं किसी भी धर्म में उनमें भी यही बात लिखी है। आज का दिन इसलिए भी मुबारक है कि आज बंगाल का नया साल का दिन है और इसीलिए इस के पुनरुत्थान की भी बात हो सकती है। यह पुनरुत्थान जो आज हमने मनाया है इस का लाभ अवश्य बंगाल को होगा। यहाँ की संस्कृति और यहाँ की कला, बंगाल देश के महान देशप्रेमी लोग, जिन्होंने सारे देश में सब को एक बड़े ऊँचे स्तर पर पहुंचाया था आज वही कहाँ से कहाँ चले जा रहे हैं। विदेशी, व्यवस्था को छोड़कर चले गए, पर अब

कहीं अधिक हम लोगों ने विदेशी संस्कृति को स्वीकार्य किया है। उस को लेकर हम लोग यह भी नहीं सोचते कि वे लोग कहाँ चले गए। हम लोग यह जानते हैं कि इन लोगों की क्या दशा है? वे कहाँ पहुँच गए। इन लोगों ने क्या पाया हुआ है।

बहुत से ईसाई लोग तो यह सोचते हैं कि ईसा मसीह इंगलैण्ड में पैदा हुए थे और उनके लिए धोती पहनने का अर्थ हिन्दु बनना है। इस प्रकार की विचित्र कल्पनाएँ हमारे सिर में बैठ गई हैं और हम सोचते हैं कि अंग्रेजीयत लेने से हम लोग ईसा मसीह को बहुत नज़दीक से देख सकेंगे। जिनको उन्होंने मलेच्छ कहा, उन्हीं को हम आदर से देखते हैं। वो लोग अब जान गए हैं कि हमारी संस्कृति, हमारी विचार धाराएँ, हमारी धर्म की ओर दृष्टि अत्यन्त सूक्ष्म है और यहाँ के लोग बहुत जल्दी सहजयोग प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन सहजयोगियों को चाहिए कि आपस में पूर्ण रूप से मेल मिलाप से रहें। और यह जो उत्थान का संदेश है हर जगह पहुँचाएं। क्योकि आज आप का देश जिस दशा में है, उस की दशा परिवर्तन के अलावा ठीक हो ही नहीं सकती, आध्यात्म् के सिवा ठीक हो नहीं सकती है। आप कुछ भी करिये। किसी प्रकार कोशिश यह कीजिए कि एक-एक आदमी को सूचना दें, कि हम कितने आदमियों को सहजयोग के बारे में बताते हैं और कितने लोगों को सहजयोग सिखाते हैं। ईसा मसीह अकेले थे। उनके साथ कोई भी नहीं था। उनके साथ सिर्फ उनके 12 शिष्य थे। उस में से भी कुछ आधे अधूरे और कुछ ऐसे वैसे। उन्होंने बहुत मेहनत की और एक बड़ा भारी संदेश अपने उत्थान से, अपने जीवन से दिया। और वह जो संदेश हमें दिखाई देता है वह वास्तव में हमारी आज्ञा पर काम करता है। और आज्ञा पर काम करके ही हमने स्थिति प्राप्त की है कि हम ब्रह्मरंध्र तक पहुंच पाते हैं। उन्होंने हमेशा क्षमा की बात की। उन्होंने हमेशा करुणा की बात की। उन्होंने कहा कि आप सबको क्षमा कर दें। क्रूस पर चढ़ कर भी उन्होंने कहा कि "हे प्रभु इन सब को क्षमा कर दीजिए। ये जानते नहीं कि ये क्या कर रहे हैं। इन सब को माफ कर दो, ये सब अन्धे हैं।" जिस समय उन्हें क्रूस पर चढ़ाया और कीलों से ठोका और कांटों का ताज पहनाया उस समय भी उन्होंने बड़े प्रेम से कहा "प्रभु इन सब को क्षमा कर दीजिए क्योंकि ये जानते नहीं कि ये लोग क्या कर रहे हैं।" यह आज्ञा चक्र की करामात है। इसलिए आज्ञा चक्र पर हमेशा कहते हैं कि आप लोग सब को माफ कर दो। आधे विचार तो हमारे अन्दर यह चलते हैं कि इसने हमें सताया, उसने हमें सताया। यह सब यदि हम परम चैतन्य पर छोड़ दें तो सब समाधान हो जाता है। कई बार तो मैं आपको बताते हुए बहुत डरती हूँ कि यदि कोई सहजयोगी गलत कार्य करता है तो मुझे बहुत घबराहट होती है कि देखो अब आई शामत। यहाँ ईसा मसीह बैठे हैं इधर गणेश जी बैठे हैं, हनुमान और भैरवनाथ बैठे हैं। इन चारों के चक्कर से छूट नहीं पाएँगे। कोई जरा सी गड़बड़ करे, पैसे में गड़बड़ करे, काम में गड़बड़ करे मैं बस सोचती रहती हूँ कि कैसे सब संवर जाए। क्योंकि जब आप पवित्र चीज़ में आ गए, जैसे एक सफेद चादर में कोई भी धब्बा पड़ जाए, तो ये दिखाई देता है, इसी प्रकार आपके अन्दर कोई दाग है तो वे फौरन पकड़ लेंगे। न जाने क्या सजा दें। यह बड़ी कठिनाई है। हालांकि अपने समय तो उन्होंने प्राण दे दिए। परन्तु हमारे बारे में उन्होंने ये कहा कि हमारे बारे में तो आप ने जो भी कह दिया, सो कह दिया। परन्तु यदि आदि-शक्ति के बारे में कुछ भी कहा तो बहुत बुरा होगा। और मैं देख रही हूँ कि वे बिल्कुल भी सहन नहीं करते। यदि आपने मुझे माँ माना है, तो मैं उस का मान करती हूँ और जब वो सताते भी हैं तो मैं कहती हूँ इन्होंने मुझे माँ कहा, इसलिए इन्हें क्षमा कर दीजिए। पर ये लोग भी इस को समझते हैं।

आपको यह समझना चाहिए कि आप लोगों का जो उत्थान हुआ है वह आपकी पूर्व जन्म की मेहनत, श्रद्धा के फलस्वरूप हुआ है। इस जन्म में आपको यह बहुत बड़ा आशीर्वाद मिला हुआ है। लोग तो समझते थे कि यह हो ही नहीं सकता। यह आशीर्वाद जो आपने प्राप्त किया है। आपको ध्यान रखना चाहिए कि आप कोई भी गलत काम न करें। क्योंकि गलत कार्य करने से आपकी जो निर्मलता है, पकड़ में आ जाएगी। मैं आपको डरा नहीं रही हूँ बल्कि यह वास्तविकता बता रही हूँ। आप जो भी करें, अत्यन्त प्रेम से, उसका आनन्द उठाते हुए। हो सकता है आपको कोई परेशान करे। कोई बात नहीं। कितनी देर परेशान करेगा, जो परेशान करेगा, उसका ठिकाना हो जाता है। किसी भी स्तर पर भूलना नहीं कि आप एक सहजयोगी हैं। पहले जमाने में कितने सहजयोगी थे। एक थे सूफी निजामुद्दीन, तो उनकी गर्दन काटने को शाह निकल आए। उन्होंने कहा कि अगर तुम मेर आगे सिर नहीं झुकाओगे तो तुम्हारी गर्दन

काट लेंगे। और दूसरे दिन उसकी गर्दन काट ली। सो अगर कभी ऐसा हो भी तो डरना नहीं क्योंकि आप लोग अब परमात्मा के साम्राज्य में हैं। और इस बात को मद्देनजर रखते हुए आप को समझना चाहिए कि अब आप लोग अकेले नहीं हैं। आप पूर्णतया सुरक्षित हैं और इस सुरक्षा में आप क्यों परेशान होते हैं।

बहुत से लोग आते हैं, माँ मुझे ये प्राब्लम है, मुझे वो प्राब्लम है। इसका अर्थ यह है कि आप सहजयोगी नहीं हैं। जो सहजयोगी होगा उसको कोई समस्या (प्राब्लम) होगी नहीं। क्योंकि आप एक ऊँची जगह पर बैठे हैं। और प्राब्लम नीचे खींचते रहते हैं। यदि आप हर समय प्राब्लम प्राब्लम करते रहें तो सोच लेना चाहिए कि कुछ कमी है आप में। इसके लिए ध्यान करें, धारणा करें। अपने अन्दर धारणा करें कि आप सहजयोगी हैं। इससे आपके अन्दर एक आत्मविश्वास पूर्णतया प्रतीत होता है, लोग भी समझते हैं। **आप केवल शांत हो जाएें। आपने चुप्पी लगा ली तो परम चैतन्य पूर्णतया संभाल लेगा।** एक से एक धुरंधर बैठे हैं। परन्तु यदि आपमें ही दोष होगा तो कहेंगे। इसको डुबकियाँ लगाओ दो-चार।

इस प्रकार ईसा मसीह का एक छोटा सा जीवन था केवल 35 वर्ष का। उसमें भी वे भटकते रहे। और भटकते हुए भारत भी आए। जितना जीवन में उन्होंने कार्य किया उनका नाम लेकर के न जाने लोगों ने कितनी तरह-तरह की संस्थाएँ बनाई। ये करना है, वो करना है। झूठ है सब, गड़बड़ है। पर कितना उन्होंने काम किया। उनके मुँह में भी न जाने कैसी-कैसी गलत वस्तुएँ डाली गईं। एक झूठी संस्था भी बना ली। जिस हीरे को इन्होंने ढक लिया वो आपके अन्दर में है। आपकी आज्ञा में कार्यान्वित है। आपकी क्षमा शक्ति जितनी बढ़ जाएगी आप उतने ही सहस्रार पर रहेंगे। ईसाई लोगों का तो यह है कि वे पैदा ही हुए ईसाई। उन्हें बस इतना ही मालूम है इसलिए हम उन्हें ईसाई स्वीकार करते हैं। हिन्दुओं को बस कृष्ण ही मालूम है, शिव मालूम है। इसी में खुश रहते हैं। और भाई, आप इससे परे उठ गए, पार हो गए, अब आप स्वयं सूफी हो गए। इन सब चीज़ों में जो सार है उसको आप ग्रहण कीजिए और प्रत्येक चीज़ में सत्य को खोजिए। बहुत सी चीज़ों में असत्य है। इन सब धर्मों में बहुत सी बातें असत्य भी हैं। जैसे ईसाई धर्म में आप देखिए, वही बात ईसाईयों में भी है और वही बात मुसलमानों में भी है। कि जब आप मर जाएँगे तो आप अपने को गाड़ लीजिए। अपना शरीर गाड़ लीजिए। जलाईए मत, और जब आपका पुर्नउत्थान होगा तो आपका यही शरीर पुन: बाहर आ जाएगा, यदि आप परमात्मा के नाम पर मरे हैं और आपने अपना जीवन उसके लिए त्यागा है। अब सोचो 500 साल बाद क्या चीज़ बाहर आएगी, यदि आप को गाड़ दिया जाए? उनसे पूछना चाहिए, कि जो हड्डियाँ बच कर आएँगी उनकी क्या स्थिती होगी। यह विश्वास बहुत लोग करते हैं यह विश्वास इतना गहरा है कि मेरे पास कुछ लोग आए थे। मैंने कहा "क्यों मरे जा रहे हो। तुम्हारा तो निराकार में विश्वास है, तुम क्यों जमीन के लिए लड़ रहे हो?" तो उन्होंन मुझे कहा कि हमारे तो शास्त्र में यह लिखा है कि यदि तुम भगवान के नाम के लिए मरे तो ऐसा-ऐसा होगा। मैंने कहा पहले तो मुझे बताओ कि इसमें भगवान का नाम कहाँ लिखा है। दूसरी बात यह बताओ कि तुम यदि मर गए और तुम्हारा पुर्नउत्थान 500 वर्ष बाद हुआ, तो अन्दर से क्या निकलेगा? तुम तो कब्रों में जाकर के सारी जमीन ले लेते हो और भूत बनते रहते हो।

इस सम्बन्ध में मैं यह कहती हूँ कि अपने शास्त्र ठीक हैं, कि मरने के बाद आत्मा जो है वा निकल जाता है। और जो जीवात्मा है वह फिर से जन्म लेता है। क्योंकि जीवात्मा मरता नहीं। शरीर का 500 वर्ष बाद पुर्नउत्थान होगा ऐसी बात का विश्वास करना महामूर्खता है। कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि ऐसी महामूर्खता को लेकर ये लोग जगह-जगह आपस में लड़ रहे हैं। आज इज़राईल में मारा-मारी हो रही है तो कल दूसरे स्थान पर होगी। यह मारा-मारी हो रही है मात्र धर्म को लेकर। मैंने कल भी बताया था कि सभी धर्म आपस में गुंथे हुए हैं। कोई भी धर्म अलग नहीं है। सभी ने यह वर्णन किया है, फिर यह लड़ाई क्यों, झगड़ा क्यों? यह सब कुछ उन लोगों का किया हुआ है जो अपने को धर्म मार्तण्ड कहते हैं। अब सोचिए कि ईसा समीह ने एक बहुत बड़ी बात कही कि "तुम्हारी दृष्टि स्वच्छ होनी चाहिए।" (Thon shalt not have adultrous eyes) यानि चित्त में भी (adultery) अस्वच्छता नहीं होनी चाहिए। पर हमने तो विदेश में देखा कि हरेक की आंखे इधर से उधर चलती रहती है। किसी को देखा ही नहीं कि जिसकी आंखें न चल रही हों। केवल सहजयोगियों को छोड़कर। इस प्रकार उन की (ईसा की) जो विशेष वाणी

थे उसको कौन पालन कर रहा है, कौन मान रहा है? कोई नहीं। क्यों? क्योंकि उन्हें आत्मबोध नहीं है। यदि उनको आत्मबोध हो जाता तो उनकी आँखे स्थिर हो जाती। उनसे प्यार झलकता है। शांति और आनन्द झरता। यह कैसे हुआ? कि उतनी आँख शुद्ध हो गई। जैसे कि ईसा मसीह ने कहा वैसी आँख हो गई। उन्होंने जो कहा था, वह मात्र कहने से थोड़े ही हो सकता है। विदेश में तो यह बिमारी आवश्यकता से अधिक है। तो हमें समझ में आता है कि जो कुछ ईसा मसीह ने कहा हम कर नहीं पाते। कोई सा भी ऐसा धर्म नहीं है जिसमें लोग जो कहते हैं वही करते हैं। कारण वे समर्थ हैं। यानि जो हैं उस का अर्थ नहीं है। कोई कहेगा मैं ईसाई हूँ परन्तु उसकी आँखों में गन्दगी भरी रहेगी। कोई कहेगा मैं जैन हूँ और वह कपड़े की दुकान करेगा। अर्थात जो नहीं करना वही करेंगे। इसका कारण है कि हमारे अन्दर वह धर्म जागृत नहीं हुआ। और सहजयोग में यह जागृत हो जाता है। **आत्मसाक्षात्कार होने के बाद, जागृत होने के बाद यदि आप उसका मान नहीं करेंगे और उसमें आप अपनी प्रगति नहीं करेंगे तो न जाने आपको क्या-क्या कष्ट झेलने पड़ सकते हैं।** इससे पहले आप को जो कष्ट थे, तकलीफें थीं वह महसूस नहीं होंगी। परन्तु अब आप संवेदनशील हो गए हैं। इसलिए समझ लेना चाहिए कि हमने जो इतनी बड़ी चीज़ पाई हे उससे हम अलकृंत हो गएं, उससे हम सज गए। अब हमें अपने वैभव में और गौरव में होना चाहिए। जैसे ईसा-मसीह का पुर्नउत्थान हुआ था। वे कब्र से उठे थे, उनका चेहरा बहुत ही खिल गया था, उन की बातें और भी सुन्दर हो गईं थीं; इसी प्रकार ईसा मसीह सहजयोगी थे। लेकिन उन्होंने उसे प्राप्त किया था और आप के लिए उन्होंने प्राण त्यागे कि आप का आज्ञा चक्र खुले। सो अहंकार आदि जो व्याधियाँ हैं उनसे दूर रहना चाहिए। अंहकार जब चढ़ जाता है तो आप कुछ भी हो सकते हैं, हिटलर भी हो सकते हैं। न जाने आप अपने आप को क्या समझ रहे हैं। जिसने हमें इस आज्ञा चक्र से ऊपर उठाया है, उस ईसा मसीह के जीवन को यदि आप देखेंगे कि वे बिल्कुल निर्मल है। इसी प्रकार हमारा जीवन भी पूर्णतया निर्मल होना चाहिए।

सहजयोग में विवाह की पूर्ण रूप से व्यवसथा है। हालांकि ईसा मसीह ने विवाह नहीं किया था। उनको कोई ज़रूरत ही नहीं थी। परन्तु आपके लिए सभी प्रकार की व्यवस्थ है। इस व्यवस्था से आप पूर्ण रूप से सर्व सामान्य लोगों की तरह रह सकते हैं और अपनी विशेषता को समझते हुए रहें। ईसा मसीह और सूफी लोग अपनी विशेषता समझते थे। अकेले ही उन्होंने सारे विश्व में कार्य किया। आपके तो सारे विश्व में इतने सारे भाई बहन हैं। कितना आपमें आत्मविश्वास होना चाहिए। आप अकेले नहीं हैं। सभी लोग एक ही बात कहते हैं सब को एक ही चीज़ प्राप्त है। और जब आप इस चीज़ को पाते हैं तो इसका महत्त्व समझना चाहिए। इससे अमूल्य और कुछ भी नहीं है।

यद्यपि मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि कलकत्ते में इतना कार्य हो गया। इतने सहजयोगी हो गए, आपस में बहुत प्रेम है, कोई फूट नहीं, कोई झगड़ा नहीं। यह बहुत बड़ी बात है। मैं सोचती हूँ कि यह देवी की कृपा है कि लोग सहज में उतरते हैं। जैसे पुरुष कार्य कर रहे हैं वैसे स्त्रियों को भी करना चाहिए। जब सब ओर सहजयोग फैल जाएगा तो बंगाल देश बहुत सुन्दर स्वरूप में उतरेगा।

आप सब को मेरा अनन्त आशीर्वाद।

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

Today we are doing Easter Puja. Today is a very important day for Sahaja Yogis because Isa-Messiah (Jesus) has shown us that redemption of human beings is possible, and for that redemption we should always put in an effort. There is also a meaning why He was crucified. He was crucified on the cross and this cross is a symbol of the Swastika on the Agnya chakra. He was crucified and He left His body there only. He told some important things at that time and one most important thing out of this was "Wait for the Mother" – "Think of the Mother". (Behold the Mother?)

Everybody can interpret it in a different way, but it seems He said that He will send for us such a shakti (power) who has three channels – Trigunatmika, and that is described very beautifully. One of these Shaktis/powers will give us comfort. This comfort-giving power in us is Mahakali's power which gives us comfort, which cures our diseases, which corrects/solves many questions of our past. The second power, which He gave us, which He sent to us, was Mahasaraswati and to this Mahasaraswati Power, He called Counsellor, the one who will counsel you – that means, who helps us for Yognirupan (to see the form of Yoga). With the help of this second power, we will get Gyan (Knowledge), we will know the subtle knowledge. And the third power, (Mahalakshmi) with the help of which we will get our redemption.

Thus, He had talked about these three powers. Buddha also said that I will send you Matreya, that means three types of mothers – Matain-Ekritya-Matreya. People did not understand what this Matreya is, and they made it Maitrya. This Matreya can be only in Adishakti – simultaneously – Adishakti, He must have told as Primordial Mother. But the one who corrected Bible, he made it as Holy Ghost – and made a dove instead of it. Because the one who corrected the Bible hated women and he did not believe that a woman could also do such a great work. Because of this hatred, he made a strange form of it (the Holy Ghost) and the second thing is that it is a dove and a dove means that she will be the messenger of peace. But He did not talk of a woman or that she will be a woman. But in our Shatras it is written „Sahasrare Mahamaya", that means She will be in the form of Mahamaya. People will not recognize Her and you have to get yourself realization to recognize Her. If you don't get your realization, you cannot recognize Her.

In His lifetime He (Jesus) explained everything in a very open manner, He could do. Many things He told and many things He didn't, but still some truth came out which they could not change. It was very necessary for Sahaja Yoga that Isa Messiah (Jesus) came. He was a Chir Balak (boy from olden times), and now it is proved that He was an incarnation of Shri Ganesha. Shri Ganesha incarnated only once in the world and that is in the form of Shri Jesus/Isa Messiah.

The work of these three(Buddha, Mahavira, Jesus(Isa)) was done at the level of Tapasya and therefore they worked in the Murdha of Virata (Brain), and there is a place of Tapasya in the work of all the three, that means human beings should do the Tapasya and they can cross through Agnya only with Tapasya. It was very necessary to pierce through Agnya chakra, without that, Kundalini cannot rise. Resurrection of Jesus facilitated the piercing of the Agnya chakra. First He died and then His resurrection took place. Therefore there is a great message from Easter that because of Resurrection of Isa-Messiah (Jesus), we could get our resurrection. The most difficult chakra in a human being is the Agnya chakra because a human being is always thinking. This continuous thinking results in a condition of vaporization of mind in the head and he cannot go beyond these thoughts. He cannot go beyond these thoughts. You can go beyond thinking only when the Agnya Chakra is opened. Therefore it can be said that Sahaja Yoga would have been very difficult if Isa (Jesus) would not have resurrected after leaving his body. However the work was done by all the Incarnations at their

respective places and at respective times. But the work which was done by the resurrection of Isa(Jesus) was marvelous. That is the reason why it is not difficult to open Agnya. It is not difficult to go beyond Agnya. There have been many Gurus, many great Gurus. They did a great work. They did so many things so that people could get their Jagruti (awareness) to God and they could attract their attention to self-realization.

He (Jesus) came to our country because the people of His country where He lived had no subtleness in their way of thinking. They had no spirituality. That is why He (Jesus) came to India and met King Shaliwahan in Kashmir. Shaliwahan asked Him „What is your name ?“ He replied „My name is Isa-Messiah“ (Isa-Messiah means the one who brings some message) and I am coming from that country where Malekh lives. Malekh means those people who desire something dirty. Now you see, all foreign programmes, they are all dirty. These people like only dirty things – crazy things. If you see their movies you don't understand whether they are mad people or something else. So in our country, these people were called Malekh (means people who desire only dirty things). How can I go to these people(Malekh). India is my country because I am a spiritual person. Shaliwahan said that “you are such a saintly person. You go back to your country and teach those people Nirmal Tatwam (principle of purity).If you make Nirmal tatwa there, people will get rid of desiring these dirty things”. He went back – somehow. He lived three and a half years and then He was crucified. This He knew was necessary. But the way (in a dignified manner) He left his body shows what a unique personality He had. And in this short period of three and a half years of His life, what He did was great. It is true that He could not give realization to anyone because there were no seekers of truth like you at that time. I have a good fortune, therefore this work before self-realization helped the people to know that there is another life beyond that human life. He said „You have to take a new birth „. His own resurrection resulted also by taking a new birth.

It is also said in our country that this second birth is like a bird who comes out of the egg and is called Dwija (who is born twice) and when he is transformed and he gets the full power, he can fly anywhere in the world. He gets all the communication powers. You know how the birds fly from Siberia to India. They come here in the winter and go back in summer. They have neither Radar nor Aeroplane. They have nothing. How do they come exactly to the same place, to the same pond where they used to come. Their children come also to the same place. Once they did an experiment where they hid some of their children – but they could find them. Some of them they could not find and they themselves flew to India alone. They had no Guide. But they reached perfectly alright.

So we can say that God has made everything so systematic and beautiful that we can get our resurrection. I call it as Blossom time. It is amazing to see thousands of you people sitting here and there are thousands of such people in some other places. All these people were not here at the time of Isa-Messiah and nobody knew at that time about self-realization and why it is necessary to get self realization. Today, also there are some blind people who don't understand these things. But thanks to the Great Gurus in our country, a big problem is solved that people know about it. Everybody knows that we should get second birth. We should know ourselves. Sufis say also the same thing. Even in all the shastras and religions the same thing is said.

Today is the new year day in Bengal , congratulations for that and therefore we can talk about its resurrection also. Bengal will be benefitted with this resurrection which we celebrated here. The culture, art of Bengal and the great patriots and sacrificers of Bengal who brought the country to a higher level, they are now lost somewhere else. Foreign rule is finished and the English people went back but we have accepted this foreign culture even more now and we don't know where these people have landed. We don't know what their condition is. Where will these people land? What have these people got? Many Christians think that Isa (Jesus) was born in England and to become Hindu for them is to wear a Dhoti. Such type of imaginations we have in our head. We think that we can see Isa from very close by becoming English. He (Jesus) named these people Malekh and we are giving so much respect to them. These people have now understood that our culture, our philosophy, opinion about

Dharma/Religion is very subtle and pure and people of our country take to Sahaja Yoga very fast. But it is the duty of Sahaja Yogis that they share this mutual brotherhood and bring this message of resurrection everywhere because the condition of your country cannot be improved without this change, without this spiritualism. We cannot improve it by looking at the sky.

Therefore everybody should try and think over it that to how many people we talk about Sahaja Yoga. Isa was completely alone. There was nobody with Him. He had only 12 disciples and some of them halfbaked. Inspite of that He worked very hard. He gave us a great message by his resurrection. This message, which seems to be quite of extrovert nature is, in reality, a subtle work on our Agnya. Only by working on Agnya we reach that state where we can pierce through Brahmrandra (Sahasrara). He (Jesus) always talked about forgiveness, that you should forgive everybody. When He was on the cross He said „Oh God! Please forgive them. They know not what they do". Therefore please forgive them. These people are blind. He said with so much love, even at that time, when the people were hammering nails on his body and crowning him with thorns that „Oh God! Please forgive them. They know not what they do". This is a wonder of Agnya Chakra.

Therefore for the opening of Agnya Chakra, I always say "please forgive everybody. Please forgive everybody fully". Half of the thoughts in us are like that. For example, he misbehaved towards me or made problems for me, how can I correct him? When we surrender everything to Paramchaitanya, He will correct it. I tell you, I fear if some people do wrong things in Sahaja Yoga. I really start worrying that these people will get problems now because on the one side is sitting Jesus, on the other side is sitting Shri Ganesha and the third and fourth side, Shri Hanumana and Shri Bhairava. They will not be able to set them free from the net of these four. Somebody is doing a little bit wrong in the matter of money or in the matter of work, I always try to solve it so that no problem comes to him because when you enter a pure atmosphere, for example, this is a white bedsheet and if a black spot comes on it, it is immediately visible. Therefore you have been made pure (Nirmal) and if a black spot comes thereon, these people will catch you immediately and I don't know what punishment you'll get. This is very difficult. Jesus let himself be crucified at that time but He said, about me, that "if you do anything against the Adishakti, I will not allow. I see when these people do wrong, He doesn't bear. If you call me Mother, I have respect for that. Sometimes they misbehave with me, then I say, that "it doesn't matter, they have called me once 'Mother' – but these people don't understand it. Therefore we should remember that it is our previous birth's hard work (Tapasya) and devotion which facilitated our resurrection.

So then you have the special blessing, in this birth, to get what people think is very difficult or impossible. So you have to be careful that you don't do anything wrong, because if you do anything wrong, your purity is caught immediately. I am not making you fearful – I am telling you the truth. So whatever you do, do it full of love and full of joy. It can happen that somebody troubles you, it doesn't matter. How long he troubles you will be taken into account. Therefore you should not forget at any stage, at any state, in any field, that you are a Sahaja Yogi. How many yogis were there in olden times? A very few Sufis. Nizammuddin was there and Shah came to cut his throat . He told him that, "if you don't bow down to me, I will cut your throat". Next day his own throat was cut.

So, if there is such a type of person, there is no need to fear. If you have to fear at all then only for that which will happen to them. Oh God! Please save them. You are in the Kingdom of God. You are not like other people. You have to remember that you are not alone. You are fully protected. Why do you worry if you have such a protection? Isa Messiah was never upset, even when He was crucified, and what worse can happen than that to you.

Many people come to me and say that "Mother, I have this problem -I have that problem". This means that you are not a Sahaja Yogi. The right thing comes out that you are not a Sahaja Yogi. If somebody is a Sahaja Yogi, he/she can't have a problem. Problems are playing somewhere down, only to be witnessed, and you are sitting at a very high place. But if we are always talking about problems, we should realize that something is not o.k. We should meditate, introspect and assume that we are

Sahaja Yogis, which awakens a feeling of inner peace and self-confidence and the people can see it. You don't have to say anything. There is no need to quarrel with anybody. Just keep quiet and Paramchaitanya will do the rest, even if they are so called very clever people. But if you yourself have done something wrong, then Paramchaitanya will take account of you first. Therefore we should …

Jesus had a very short life of 33 years – what a short life. And He was wandering all the time. While wandering, He went to India and how much He worked in His life. So many things were founded after His name, so many Institutions – this and that. Everything is deceptive. But how much he worked and in the end wrong things were given in His mouth and false institutions were grounded. But there is nothing in this outer religion. You can see it now. The diamond which was covered by them is shining inside you now and is operative in your Agnya chakra. The more your forgiving power increases, the higher you will go in Sahasrara.. Now the difficult thing for the Christians is that, as they are born Christians, they think of only Jesus or Jesus's Mother. They don't go beyond that. There may be other incarnations – it is of no interest to them. The same is with the Hindus. Hindus know only Shri Krishna or Shri Shiva – they are lost in that. But you have reached much higher now. You have got your realization now. You have become Sufis. Therefore you have to take the essence of all these things and to search the truth in everything. There are many false things in these religions. For example, in Christianity, I don't know whether you know – the same is with Jews and Muslims, that when you die, you bury your body and don't burn it and when you get your resurrection, this body will come out. You get your resurrection only if you die in the name of God and you sacrifice your life for Him. Now you think, what will come out after 500 years? If you are buried, what bones etc. will come out after 500 years? How will resurrection take place? Many people believe in it and this belief is so deep that some people came to me from Bosnia. I asked them why are you dying? Leave this nonsense, you are Muslims, you believe in Nirakara. For what are you fighting ? For land, what does it mean? They told me that "it is written in our shastras, that if you die in the name of God, then such and such will happen". I asked them "Where is God's name in this type of dying?, please tell me.

The second thing is, that if you die and get your resurrection after 500 years, what will come out of this. On the other hand, you take so much land for these graves and live as bhoots in these graves. I must say that our shastras are correct in this regard, that Atma leaves the body after death and Jeevatma takes the new birth. This is true, that Jeevatma does not die. But to believe that the resurrection of body will take place after 500 years is complete foolishness. Sometimes I don't understand why these people are fighting because of this foolishness.

Today there is fighting going on in Israel and tomorrow somewhere else. Everywhere there is some problem because of religion. Wherever you go there is fighting because of religion. I said yesterday also that there is no separate religion. They are all connected. This is clear, that all of them have described about the people who came before them. Why this fighting then? Because some people say that they are mediators. They call them Dharammartand (those who have command on Dharma) and do just the opposite of that which was told by these saints.

Now you see, Isa (Jesus) had said a very important thing, that your eyes should be without adultery. But Western people do just the opposite of this."Thou shall not have adulterous eyes". How subtle is this? „Thou shall not have adulterous eyes „. Not to think of adultery, even eyes should not be adulterous. There should not be adultery in the mind – very subtle thing. He said, "and when I went to a foreign country what did I see – everybody's eyes moving here and there (flirting). I didn't see anybody whose eyes were steady except Sahaja Yogis. Before coming to Sahaja Yoga, the eyes are moving here and there. Women are looking at men and vice-versa and this is going on. Some are looking at the things. So who followed this important message of Him (Christ). Who is following Him? Nobody. The only reason is that they have not got their realization. I have seen the people in the West when they get their realization, their eyes also get very steady. Love, peace and joy (Anand) flows from this steadiness. How this happens is because the impurity in the eyes vanish and the eyes become pure (Nirmal). The eyes become like that which Isa said. But this cannot happen only with

words. In the west, this disease is too much. So what we understand is that we can't do what He (Jesus) said. Every religion is the same. There is no religion where the people do the same as what is told to them. The reason is, that they are not Samarth (capable). Samarth means the same thing. In this case they can't do what they are supposed to do. Somebody says that he is a sikh, but he drinks wine. Somebody says, I am Christian and his eyes are full of lust. Somebody says he is a Jain and he does the cloth business and so on. They do what they should not do. The reason is that Dharma (Religion) is not yet fully awakened in us and it can be awakened only by Sahaja Yoga.. If you don't respect yourself realization and don't ascend in that, you can get different problems. These problems which you don't feel much before realization, feel more now because you have become sensitive now. Therefore we should know what a great thing we have got. We are equipped with that. We should assume our dignity and glory now.

In the same way when Isa got up from his grave, He and His mind were more pure and beautiful. His talks were more beautiful and open. Therefore He (Jesus) is a great Sahaja Yogi for us. He had already achieved everything before. He came after having everything and He died for you so that your Agnya Chakra could be opened. Therefore we should keep away from Ego and similar things. If you have this Ego, then you can become anything – you can become Hitler. If you put attention on yourself and try to understand why you assume yourself a big shot in the whole world. We should see the pure character of Isa who opened the Agnya and helped us to rise above that . Our life should also be pure (Nirmal) like that. There is a complete arrangement of married life and other things in Sahaja Yoga.

Isa had not married because He didn't need it, but for you there is such a complete arrangement and you can live fully like normal people. From inside you are abnormal. We should understand our special role as Isa and Sufis did. They fought alone against this world and did such a great work. You people have so many brothers and sisters in the world. You should have so much self-confidence in you because you are not alone. They all say the same thing like you say. All of you have the same thing as they have. If you get this thing, You should realize its importance. There is nothing more valuable than that. I am very happy that such a big work is done in Calcutta. We have so many new Sahaja Yogis. There is so much mutual love and no fighting. This is a big thing. I think there must be Devi's compassion here that people have gone so deep after getting to Sahaj. Women should also work like the men and when Sahaja Yoga spreads all over, you will see that Bengal will become a beautiful form.

Anant Ashirwad to all of you.